SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बालकों की पालन–पोषण शैली और मनोवैज्ञानिक विकास

ईश्वरी खटवानी, Ph.D., मानव विकास विभाग
एस.एस. गर्ल्स कॉलेज, गोंदिया, महाराष्ट्र, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
ईश्वरी खटवानी, Ph.D.
E-mail : ishwari369@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/07/2024
Revised on : 16/09/2024
Accepted on : 25/09/2024
Overall Similarity : 02% on 17/09/2024

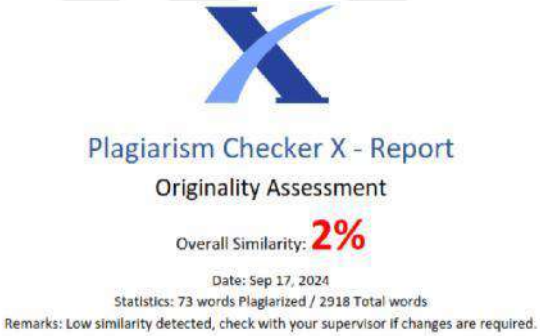

शोध सार

प्रस्तुत लेख बालकों के मनोवैज्ञानिक विकास पर पालन पोषण शैलियों के प्रभावों का एक सिंहावलोकन है जिसमें व्यक्तित्व, लक्षण, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास के साथ–साथ अप्रभावी या खराब पालन पोषण के कारण समस्या व्यवहार का उद्भव शामिल है। माता–पिता तथा परिवार के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संपर्क के परिणामस्वरूप बालकों के समाजीकरण के तंत्र पर प्रकाश डालता है। यह लेख सुझाव देता है कि आधिकारिक पालन–पोषण सामान्य और स्वस्थ मनोवैज्ञानिक विकास के लिए सबसे बड़ा योगदान कारक है, जबकि सत्तावादी एवं अनुमोदक पालन–पोषण शैलियाँ अनुचित शैलियाँ हैं और उपेक्षापूर्ण या असंबद्ध पालन–पोषण शैली एक ख़राब पालन–पोषण है जो भविष्य में सभी प्रकार के समस्याग्रस्त व्यवहारों और कुसमायोजन के लिए जिम्मेदार है।

मुख्य शब्द

पालन–पोषण की शैलियाँ, मनोवैज्ञानिक विकास.

बालक के जन्म लेते ही माता–पिता पर अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ आ जाता है। अभिभावक–बालक के संपर्क से बालक का समाजीकरण होता है। बालकों के समग्र मनोवैज्ञानिक विकास में पालन–पोषण शैली बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है जिसमें क्षमता, आत्म–सम्मान, व्यक्तित्व लक्षण, भावनात्मक अभिव्यक्ति, सामाजिक संबंध, नैतिक विकास के साथ–साथ समस्या व्यवहार का विकास भी शामिल है। पालन–पोषण शैली को अभिभावकों के व्यवहारों के संयोजन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विभिन्न स्थितियों में बालक के पालन–पोषण का एक स्थायी माहौल बनाते हैं। यह एक पारिस्थितिक चर है जो बालक के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। बॉमरिंड (1971) ने तीन बुनियादी

पालन–पोषण शैलियों की पहचान दी हैं: सत्तावादी, आधिकारिक और अनुमोदक। मैककोबी और मार्टिन (1983) द्वारा आगे के शोध में एक और पालन–पोषण शैली जोड़ी गई जिसे असंबद्ध या उपेक्षित पालन पोषण शैली कहा जाता है।

परिवार में समाजीकरण की तकनीकियाँ

माता–पिता कम से कम तीन अलग–अलग शैलियों के माध्यम से अपने बालकों को प्रभावित कर सकते हैं। इनमें से सबसे पहला और सबसे स्पष्ट है बालकों के साथ सीधा हस्तक्षेप। उदाहरण के लिए, एक माँ अपने 3 साल के बालक के ठीक से खाने के अच्छे तरीके की प्रशंसा करती है। एक पिता बालक को विद्यालय के समय तैयार नहीं होने पर अपने विशेषाधिकार वापस लेने की धमकी देता है। इसी प्रकार माता–पिता बालक को कुछ अतिरिक्त ज्ञान या नई अवधारणाएँ प्रदान करते हैं। ये रोजमर्रा की घटनाएँ जिनमें वांछनीय कार्यों के लिए पुरस्कार, अवांछित कार्यों को दंडित करना और माता–पिता से बालक में ज्ञान का परिवर्तन शामिल है, का संचयी प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, अवज्ञा और आक्रामकता के कृत्यों को अनुशासित करने में विफलता बालकों के असामाजिक व्यवहार से संबंधित है। छोटे बालक की गतिविधियों में रुचि का प्रदर्शन बालकों में जिम्मेदारी के उच्च स्तर से संबंधित है। इस प्रथम तकनीक का बौद्धिक विकास और चरित्र लक्षणों, विशेष रूप से आक्रामकता पर नियंत्रण और उपलब्धियों के लिए प्रेरणा पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है।

दूसरी तकनीक जिसमें परिवार बालकों को प्रभावित करता है वह माता–पिता में से किसी एक या दोनों के साथ भावनात्मक पहचान के माध्यम से होता है लेकिन बिल्कुल अलग तरीके से। 4–5 वर्ष की आयु तक बालक अनजाने में यह विश्वास कर लेते हैं कि उनके माता–पिता के कुछ गुण उनके अपने प्रदर्शनों का हिस्सा हैं, भले ही इन मान्यताओं का कोई वस्तुनिष्ठ आधार नहीं है। पारिवारिक प्रभाव का तीसरी तकनीक माता–पिता के परिवार के सदस्यों के साथ पहचान से संबंधित है जब माता–पिता उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में उनकी सफलता के बारे में अपने रिश्तेदारों और रिश्तेदारों के विषय में कहानियां सुनाते हैं। माता–पिता और पारिवारिक कहानियों के साथ पहचान के दूसरे और तीसरे तंत्र का बालक के आत्मविश्वास या उसकी प्रतिभा के विषय में संदेह पर और इसलिए बालक की भविष्य की सफलता की उम्मीद पर अधिक प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, इन तकनीकियों का प्रभाव स्थितियों के बड़े जाल का एक हिस्सा है जिसमें विरासत में मिले स्वभावगत पूर्वाग्रह, क्रमिक स्थिति, सामाजिक वर्ग, जातीयता, सहकर्मी मित्रता की गुणवत्ता और ऐतिहासिक युग जिसमें किशोरावस्था बिताई जाती है, शामिल हैं, किन्तु इन सबके अलावा यह कहना अधिक सटीक होगा कि माता–पिता के गुण ही बालक के मनोवैज्ञानिक विकास में योगदान करते हैं।

पालन–पोषण की शैलियाँ और व्यक्तित्व

प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और प्रत्येक के अपने व्यक्तित्व लक्षण हैं। व्यक्तित्व उंगलियों के निशान की तरह है जो दो व्यक्तियों में एक जैसा नहीं मिलेगा। व्यक्तित्व का निर्माण उन अनुभवों से होता है जिनका हम सामना करते हैं। यह हमारी परवरिश का नतीजा है,व्यक्तित्व विकास पर माता–पिता का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है, जबकि पालन–पोषण की शैलियों का बालक की भलाई पर प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा कुछ व्यक्तित्व लक्षणों पर पालन–पोषण शैलियों के प्रभावों का अध्ययन किया गया। इस संबंध में पांच कारक व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करने में स्वतंत्र निर्माणों के रूप में सबसे व्यापक रूप से दिखाई देते है जो इस प्रकार हैं, अनुभव के प्रति खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, सहमतता और विक्षिप्तता आदि हैं। अनुभव के प्रति खुलापन, जिज्ञासा, कल्पना, सौंदर्यशास्त्र, ज्ञान और मानवतावाद की इच्छा है। कर्तव्यनिष्ठा संगठन, अनुशासन, स्वायत्तता, दक्षता, विश्वसनीयता, निरंतरता, प्रगतिशीलता, तर्क और प्रतिबिंब की इच्छा है। सहमतता का तात्पर्य माफी, दया, परोपकार, आत्मविश्वास, सहानुभूति और बलिदान की इच्छा से है। न्यूरोटिसिज्म को चिंता, तनाव, आत्म–उपभोग की शत्रुता, शर्म, तर्कहीन सोच अवसाद और कम आत्मसम्मान का अनुभव करने की इच्छा के रूप में वर्णित किया गया है। बहिर्मुखता को सक्रिय, मुखर, ऊर्जावान, बातूनी और अभिव्यंजक होने की प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया गया है। यह उत्साह की भावना और आसपास की दुनिया से जुड़ने की इच्छा का वर्णन करता है।

ये पांच कारक पालन–पोषण शैली द्वारा निर्धारित पाए गए हैं मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन से देखा कि व्यक्तित्व के पांच बड़े कारकों में से, विक्षिप्तता और सत्तावादी पालन–पोषण शैली में महत्वपूर्ण सहसंबंध था। एक अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि व्यक्तित्व के घटकों में खुलेपन के व्यक्तित्व गुण और आधिकारिक पालन–पोषण शैली के बीच सीधा महत्वपूर्ण संबंध है। एक अध्ययन में पाया गया कि तीन व्यक्तित्व लक्षण अर्थात् सहमतता, बहिर्मुखता और खुलापन का आधिकारिक और अनुमोदक पालन–पोषण शैलियों के साथ सकारात्मक संबंध है और सत्तावादी पालन–पोषण शैली के साथ नकारात्मक संबंध है।

पांच कारकों के अलावा व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं पर पालन–पोषण शैलियों का प्रभाव देखा गया है। व्यक्तित्व शैलियों और नियंत्रण के बीच संबंधों की जांच में पाया कि जो बालक अपने माता–पिता को एक आधिकारिक पालन–पोषण शैली के रूप में मानते थे और अनुभव के लिए खुले थे, उन्होंने नियंत्रण के आंतरिक नियंत्रण का प्रदर्शन किया। परिवार के भावनात्मक माहौल और रचनात्मकता के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध और तानाशाही सिद्धांत और रचनात्मकता के बीच एक नकारात्मक संबंध देखा गया है। डॉर्डी और पोल (2018) ने किशोरों के व्यक्तित्व और उनकी शैक्षणिक प्रेरणा के साथ पालन–पोषण की शैलियों के संबंध का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया और पाया कि शैली में आधिकारिक पालन–पोषण और आंतरिक प्रेरणा के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है। कर्तव्यनिष्ठा और आधिकारिक प्रकार के पालन–पोषण के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध भी मौजूद था।

पालन–पोषण शैली और सामाजिक विकास

पालन–पोषण शैली को दो व्यापक आयामों–नियंत्रणध्मांग और प्रतिक्रियाशीलता के साथ माना गया है। नियंत्रण में वे दावे शामिल हैं जो माता–पिता परिपक्वता, पर्यवेक्षण और अनुशासन से संबंधित बालक पर करते हैं और जवाबदेही माता–पिता के उन कार्यों को संदर्भित करती है जो ध्यान देने और समर्थन करने के द्वारा व्यक्तित्व, आत्म–नियमन और आत्म–पुष्टि को बढ़ावा देते हैं। पालन–पोषण की चार शैलियों में से अधिनायकवादी पालन–पोषण की विशेषता उच्च स्तर का नियंत्रण और निम्न स्तर की प्रतिक्रिया है। अनुमेय पालन–पोषण को निम्न स्तर के नियंत्रण और उच्च स्तर की प्रतिक्रिया की विशेषता होती है, जबकि आधिकारिक पालन–पोषण को नियंत्रण और प्रतिक्रिया दोनों के उच्च स्तर की विशेषता होती है और उपेक्षापूर्ण या असंबद्ध पालन–पोषण को नियंत्रण और प्रतिक्रिया दोनों की कमी की विशेषता होती है।

शोध से पता चला है कि आधिकारिक पालन–पोषण बच्चों में उच्च सामाजिक क्षमता से जुड़ा हुआ है क्योंकि ऐसे माता–पिता मांग और प्रतिक्रिया को संतुलित करते हैं इसलिए, आधिकारिक माता–पिता के बालक सक्षमता और शुरुआती सहकर्मी संबंध दिखाते हैं और युवा वयस्कों के रूप में उनकी भावनात्मक भलाई अधिक होती है। यद्यपि अधिनायकवादी और अनुज्ञावादी पालन–पोषण शैलियाँ पालन–पोषण स्पेक्ट्रम के विपरीत छोरों का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती हैं, लेकिन किसी भी शैली को सकारात्मक परिणाम से नहीं जोड़ा गया है। संभवतः इसलिए क्योंकि दोनों ही बालकों के लिए तनाव से निपटना सीखने के अवसरों को कम करते हैं। अधिनायकवादी पालन–पोषण में बहुत अधिक नियंत्रण और मांग बालकों के स्वयं के लिए निर्णय लेने और उनकी जरूरतों को उनके माता–पिता को बताने के अवसरों को सीमित कर सकती है, जबकि अनुदार, अनुग्रहकारी पालन–पोषण में बालकों के पास उचित नैतिकता और लक्ष्य विकसित करने के लिए आवश्यक दिशा और मार्गदर्शन का अभाव हो सकता है।

हालाँकि, बालकों की उम्र बढ़ने के साथ–साथ पालन–पोषण की गुणवत्ता स्थिर और सुसंगत नहीं हो सकती है। बालकों की परिपक्वता और बदलते समय के साथ माता–पिता के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं के साथ इसमें सुधार और गिरावट आती है, लेकिन लंबे समय तक पालन–पोषण शैली में कुछ स्तर की स्थिरता आ जाती है।

पालन–पोषण शैली और भावनात्मक विकास

बालक का प्रारंभिक भावनात्मक विकास माता–पिता और बालक के बीच गतिशील बातचीत और उस वातावरण से होता है जिसमें वे विकसित हो रहे हैं। पालन–पोषण की शैली जिसमें बालक के प्रति माता–पिता का व्यवहार

और दृष्टिकोण शामिल होता है, परिवार के भावनात्मक माहौल को निर्धारित करता है। पालन–पोषण शैली के आयाम और दृष्टिकोण ने आम तौर पर बालक के विकास में तीन पालन पोषण आयामों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया है, जैसे स्नेह, व्यवहार नियंत्रण और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण। स्नेह का तात्पर्य माता–पिता–बालक के रिश्ते में सकारात्मक प्रभाव, प्रतिक्रिया और समर्थन से है। व्यवहार नियंत्रण से तात्पर्य दृढ़ और सुसंगत अनुशासन (जैसे सीमा निर्धारण, परिपक्वता की मांग, निगरानी) के माध्यम से बालक के व्यवहार के विनियमन से है। मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का तात्पर्य माता–पिता द्वारा प्यार–वापसी और अपराध बोध के माध्यम से बालक की भावनाओं और व्यवहार पर नियंत्रण करना है। ये तीन पहलू कमोबेश हर पालन–पोषण शैली में शामिल होते हैं।

भावनात्मक समाजीकरण पर शोध से पता चला है कि बालक की भावनात्मक अभिव्यक्ति को कम करने या भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें दंडित करने से बालक की भावनात्मक अभिव्यक्ति की तीव्रता बढ़ जाती है, जिससे वे भावनात्मक रूप से अधिक प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं और भावनात्मक रूप से कम आत्म–विनियमन करते हैं। इसके अलावा आधिकारिक पालन–पोषण (अर्थात् उच्च माता–पिता का स्नेह और व्यवहार नियंत्रण) को अधिक विकसित भावनात्मक कार्यप्रणाली जैसे कि समय के साथ बालक में सहानुभूति संबंधी प्रतिक्रिया का पूर्वानुमान लगाते हुए दिखाया गया है। अनुमेय (उच्च स्नेह और कम व्यवहार नियंत्रण) और अधिनायकवादी (कम स्नेह और उच्च व्यवहार नियंत्रण) पालन–पोषण को बालक की भावनात्मक शिथिलता से संबंधित दिखाया गया है, उदाहरण के लिए, खराब भावनात्मक विनियमन और आक्रामकता। इसके अलावा यह देखा गया है कि उच्च स्तर का मनोवैज्ञानिक नियंत्रण अवसाद, चिंता और आंतरिक संकट जैसी आंतरिक समस्याओं को जन्म देता है। मातृ और पितृ दोनों मनोवैज्ञानिक नियंत्रण बालकों की उच्च स्तर की नकारात्मक भावनाओं से जुड़े थे।

पालन–पोषण की शैली और समस्यापूर्ण व्यवहार यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि माता–पिता बालक के व्यवहार के परिणामों में महत्वपूर्ण कारक हैं। प्रभावी पालन–पोषण योग्यता, आत्म–प्रभावकारिता, आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान की उच्च उपलब्धियाँ लाता है जो भावी जीवन के लिए सहायक होते हैं, जबकि अप्रभावी पालन–पोषण बच्चों में समस्यापूर्ण व्यवहार और कुसमायोजन लाता है। आधिकारिक पालन–पोषण शैली को पालन–पोषण की प्रभावी शैली माना गया है, जबकि सत्तावादी, अनुमोदक और असंबद्ध पालन–पोषण शैलियों को अप्रभावी पालन–पोषण शैलियों के अंतर्गत माना जाता है।

व्यवहार संबंधी समस्याएं जिनमें बाहरी समस्याएं (जैसेः अतिसक्रियता, नियम–तोड़ने वाले व्यवहार और आक्रामकता) और आंतरिक समस्याएं जैसे चिंता, वापसी और अवसाद शामिल हैं, बचपन में सबसे आम कुसमायोजनों में से एक हैं। प्रारंभिक बचपन में व्यवहार बाद के जीवन में नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य परिणाम का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता है। उदाहरण के लिए, बालक बचपन के दौरान कई प्रकार की कठिनाइयों जैसे आचरण संबंधी विकार, शैक्षिक उपलब्धि और साथियों से संबंधित और साथ ही किशोरावस्था और वयस्कता में नकारात्मक परिणाम जैसे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं और असामाजिक व्यवहार के बारे में अत्यधिक पूर्वानुमानित होते हैं। पूर्व बाल्यावस्था में व्यवहार संबंधी समस्याएं बचपन में सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं की एक श्रृंखला के विकास में बाधा बन सकती हैं, जो सामाजिक भावनात्मक और संज्ञानात्मक कुरूपता से संबंधित समस्या व्यवहार के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है। बाल्यावस्था के दौरान व्यवहार संबंधी ये समस्याएं बालक और माता–पिता दोनों के लिए नुकसानदेह मानी जाती हैं इसलिए पूर्व बाल्यावस्था में समस्याओं के विकास को समझना आवश्यक है।

अब इस बारे में कि कैसे अप्रभावी पालन–पोषण शैलियाँ बालक में समस्याग्रस्त व्यवहार उत्पन्न करने में योगदान या मध्यस्थता करती हैं। अधिनायकवादी शैली वाले माता–पिता अपने बालकों के व्यवहार को आचरण के एक निर्धारित मानक के अनुसार नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। आमतौर पर एक पूर्ण मानक (बाउमारिंड, 1971)। अधिनायकवादी माता–पिता अपने बालक को अनुशासित करने और उन्हें न्यूनतम स्वायत्तता देने के लिए मांगों का उपयोग करते हैं। इसके अलावा वे अपने माता–पिता–बालक के रिश्ते में कम स्नेह और भावनात्मक गर्मजोशी भी प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार का पालन–पोषण बालक के मनोवैज्ञानिक विकास के साथ नकारात्मक

रूप से जुड़ा होने की संभावना है, अर्थात् सत्तावादी माता–पिता के बालक में कम आत्म–सम्मान, कम संतुष्ट और कम सुरक्षित होने और दुनिया के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होने की संभावना है। इसके विपरीत, आज्ञाकारिता और मानक के मामले में उनके अच्छा प्रदर्शन करने की संभावना है। दूसरी ओर, अनुमेय पालन–पोषण में कम माँगें और उच्च प्रतिक्रियाशीलता होती है। इसकी विशेषता निगरानी नियंत्रण और अनुशासन की कमी है, फिर भी यह गर्मजोशी और पोषण देने वाला है। अनुमति देने वाले माता–पिता अपने बालक की इच्छाओं और कार्यों के प्रति गैर–दंडात्मक और स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करने का प्रयास करते हैं और अपने बालक को यथासंभव अपनी गतिविधियों को विनियमित करने की अनुमति देते हैं। अनुज्ञेय पालन–पोषण तब होता है जब माता–पिता सीमाएँ निर्धारित करने में विफल हो जाते हैं और अपने बालक से विकास–मानसिक रूप से उचित व्यवहार की अपेक्षा नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप, इस प्रकार का पालन–पोषण बालक के मनो–सामाजिक विकास के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ा होने की संभावना है और अनुदार माता–पिता के बच्चे आत्ममुग्ध प्रवृत्ति, सामाजिक गैर–जिम्मेदारी और आत्म–केंद्रित प्रेरणा जैसी विशेषताओं का प्रदर्शन करते हैं। एक अन्य प्रकार का पालन–पोषण है जिसे असंबद्ध या उपेक्षित पालन–पोषण के रूप में जाना जाता है। ऐसे माता–पिता को बालक की देखभाल की बहुत कम चिंता होती है और वे पालन–पोषण में शामिल नहीं होते हैं। वे अक्सर अपने बच्चों के प्रति उपेक्षापूर्ण और उपेक्षापूर्ण रवैया दिखाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कम आत्म–सम्मान, विद्रोहीपन, आवेग और अपराधी व्यवहार होता है। रोहनर के स्वीकार–अस्वीकार के सिद्धांत ने इसे अच्छी तरह से प्रमाणित किया है। बालक के मानसिक–सामाजिक विकास के लिए इसे पालन–पोषण का सबसे खराब प्रकार माना जाता है।

प्रारंभिक शोध में यह बताया गया है कि दो गंभीर या बहुत सावधान माता–पिता बालक को अपने माता–पिता के प्रति वयस्क अधिकार के प्रति विद्रोही बना देते हैं। यह देखा गया है कि जब माता–पिता बालक की उपेक्षा करते हैं और उसे बहुत कम समय देते हैं तो इससे खराब समायोजन और चूक की संभावना होती है। इसके अलावा, जब माता–पिता का बालक के प्रति रवैया प्रतिकूल होता है, जैसा कि प्रभुत्व के मामले में होता है, तो स्वामित्व वाले या अनदेखी करने वाले माता–पिता का घर के अंदर समायोजन खराब होने की संभावना होती है। कई शोध अध्ययनों में माता–पिता के माता–पिता के व्यवहार को अस्वीकार करने और बच्चों की व्यवहार संबंधी समस्याओं के बीच सीधा संबंध देखा गया है। भावनात्मक रूप से कुसमायोजित बालकों की माताएं प्रतिबंधात्मक, सत्तावादी, चिड़चिड़ी, बालकों में निर्भरता बढ़ाने वाली और दमनकारी थीं। अस्वीकार करने वाले और शत्रुतापूर्ण माता–पिता बच्चे को कठोर, आक्रामक रोल मॉडल पेश करते हैं जिसके साथ वह संपर्क से बचने का प्रयास कर सकता है। इसके परिणामों में से एक के रूप में, बालक घर में माता–पिता को धमकाने के प्रति थोड़ी स्पष्ट आक्रामकता प्रदर्शित करता है, लेकिन घर के बाहर सहपाठियों और शिक्षकों जैसे अन्य लोगों के लिए इसे विस्थापित कर सकता है, जहां वह प्रतिशोध से कम डरता है।

हालाँकि कई अध्ययनों ने पालन–पोषण शैलियों में पश्चिम और पूर्वी एशिया के बीच सांस्कृतिक अंतर दिखाया है। हालाँकि, पूर्व बाल्यावस्था में व्यवहार संबंधी समस्या पर सत्तावादी और अनुदार पालन–पोषण के प्रभाव पर सीमित शोध हुआ है। उदाहरण के लिए, जापानी और चीनी माता–पिता पश्चिमी संस्कृतियों के माता–पिता की तुलना में सख्ती और माता–पिता के नियंत्रण जैसी सत्तावादी पालन–पोषण शैली का समर्थन करने की अधिक संभावना रखते हैं (पावर, कोबायाशी–विनाटा और केली, 1992य पोर्टर एट अल।, 2005)। पूर्वी–एशियाई देशों में बालकों को पश्चिमी देशों की तुलना में आज्ञाकारी और विनम्र होने की अधिक संभावना है (अजुमा, 1994य चाओ, 1994)। ये सांस्कृतिक अंतर बाल्यावस्था में अनुशासन से जुड़े बालक के परिणामों में भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

मनोवैज्ञानिक विकास में पालन–पोषण शैलियों की भूमिका के विषय में परिणामों और तर्कों के पूर्ववर्ती अवलोकन से यह स्पष्ट हो सकता है कि आधिकारिक पालन–पोषण शैली सबसे प्रभावशाली और उपयुक्त पालन–पोषण शैली है जो क्षमता, आत्म–सम्मान, सामाजिकता, भावनात्मक परिपक्वता, रचनात्मकता, शैक्षणिक

उपलब्धि की ओर ले जाती है। आत्म–प्रभावकारिता, आत्मविश्वास एवंबालक को भविष्य में एक अच्छी तरह से समायोजित नागरिक बनने में मदद करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधिकारिक पालन–पोषण में देखभाल (अनुशासन) और स्नेह पर संतुलित जोर दिया जाता है। बालक को सामाजिक मानदंडों और अच्छे समाजीकरण के प्रति प्रशिक्षित किया जाता है और माता–पिता से उच्च स्नेह प्राप्त होता है। अधिनायकवादी पालन–पोषण में केवल नियम और प्रतिबंध लगाए जाते हैं और बालक के स्नेह या स्वीकृति पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। अनुज्ञाकारी पालन–पोषण में बालको को बालकों के दस्ताने के रूप में माना जाता है और माता–पिता बालक को प्रशिक्षित करने पर जोर नहीं देते हैं। जहां तक उपेक्षित या असंबद्ध माता–पिता का संबंध है, बालक को न तो उचित ध्यान और प्यार मिलता है और न ही मांग (नियंत्रण) की कोई परवाह होती है इसलिए, यह एक ख़राब पालन–पोषण है और अधिकतर समस्याग्रस्त व्यवहारों के प्रति उत्तरदायी है।

संदर्भ सूची

1. Hong, E. (2012) Impacts of parenting on children's schooling. *Journal of Student Engagement: Education matters,* Volume 2, Issue 1, p. 31-41.
2. Jacob S. E. (2015) Parental Influence on Adolescent Development. *International Journal of Engineering Research & Technology (IJERT),* Volume 3, Issue 28, p. 1-3
3. Johari T., Zulkifli M. and Maharam M. (2011) Effects of Parenting Style on Children Development. *World Journal of Social Sciences,* Vol. 1. No. 2, Pp. 14 – 35
4. Joseph M. V., John J. (2008). Impact of parenting styles on child development. *Global Academic Society Journal: Social Science Insight,* Vol. 1, No. 5, pp. 16-25. ISSN 2029-0365
5. Kotchick, B. A., & Forehand, R. (2002). Putting parenting in perspective: A discussion of the contextual factors that shape parenting practices. *Journal of Child and Family Studies,* 11(3), 255–269.
6. https://www.abplive.com/lifestyle/best-parenting-tips-for-good-upbringing-of-your-child-in-hindi-2198985, Asseced on 03/10/2023.
7. https://hindi.news18.com/news/lifestyle/10-good-parenting-tips-bgys-3489289.html, Asseced on 03/10/2023.
8. https://www.schoolmykids.com/parenting/25-tips-for-how-to-be-a-good-parent-in-hindi, Asseced on 03/10/2023.
9. https://skillinfo.in/good-parenting-skills-in-hindi/, Asseced on 03/10/2023.
10. http://theattachedfamily.com/?p=2151, Asseced on 03/10/2023.

****